३. गायन

बालगीत

कितनी सुंदर तितलियाँ

चलो पकड़कर पाएँ खुशियाँ,
कितनी सुंदर तितलियाँ ।
नीली, पीली, काली, जामुनी,
रंग विविध मनभावनी,
पंखों की शोभा अनुपम,
फूलों पर बैठे हरदम,
मानो करती हों कनबतियाँ...।।१।।

कहो तो माँ हम पकड़ें उसको,
खेल खिलाने ले जाएँ,
कष्ट नहीं देंगे हम उसको,
मित्र सभी हरषाएँ,
डालें हम दुलार की गलबहियाँ...।।२।।

माँ बोली ना ना रे बच्चो,
ये हैं नन्हे जीव बेचारे,
इनके नाजुक पंख दुखेंगे,
कैसे घर पहुँचेंगे सारे,
मुक्त उड़ें ये कलियाँ-कलियाँ,
कितनी सुंदर तितलियाँ...।।३।।

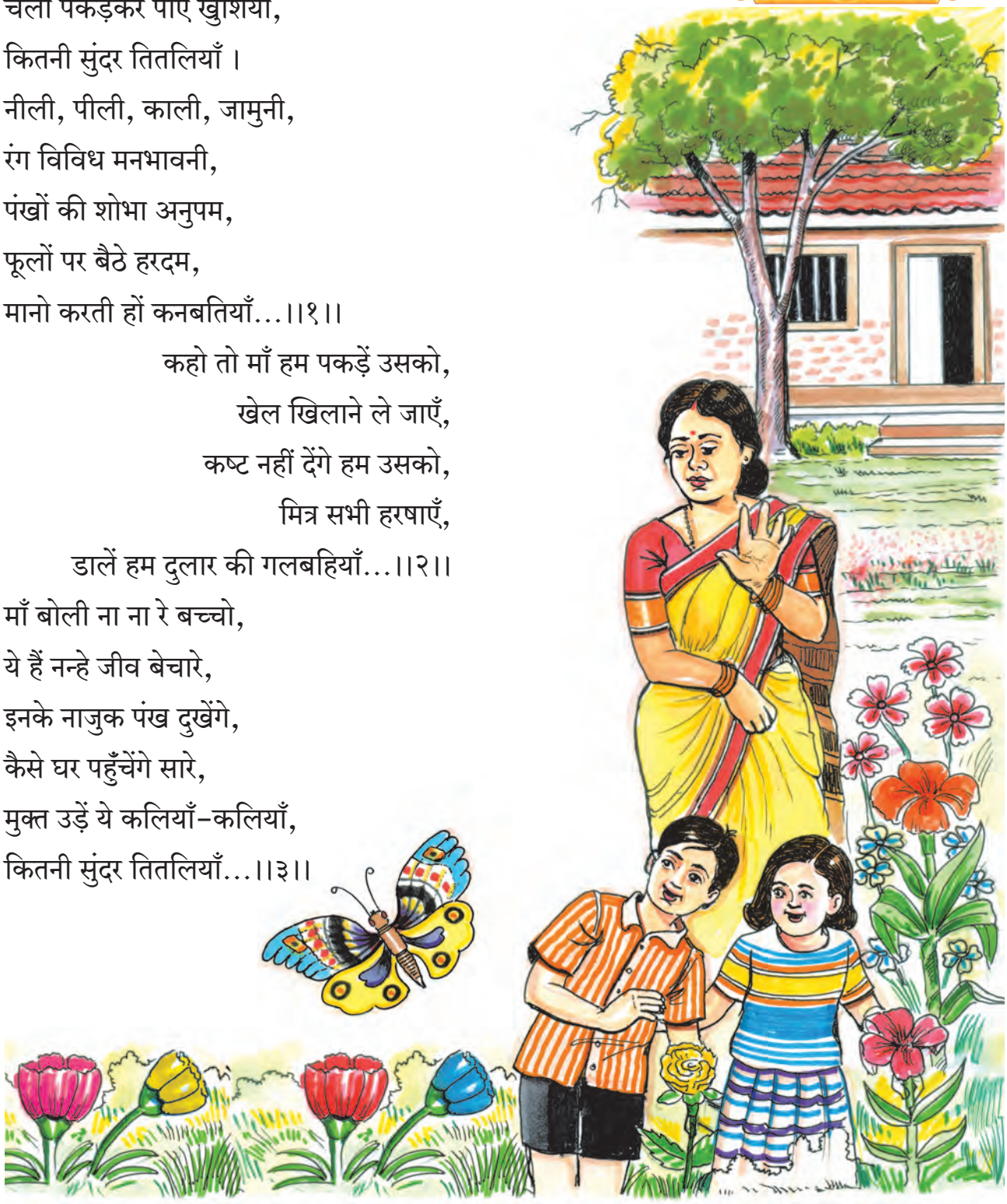

समूह गीत / प्रकृतिगान

पतंगा

एक पतंगा जामुनी, जामुन खाए खूब,
एक पतंगा है नीला, दिखता सुंदर रूप ।
एक पतंगा नभ जैसा, आसमानी छाया,
एक पतंगा हरा-हरा, ज्यों धरती की माया ।
एक पतंगा पीला है, सेवंती का थाल,
एक पतंगा नारंगी, नारंगी रंग माल ।
एक पतंगा लाल-लाल, ऊँची भरी उड़ान,
पतंगों के रंगों का, अनुपम दिखे वितान ।
मेरे रंगों से भी सुंदर, कैसे इनके रंग,
देख के रूठा इंद्रधनुष, हो रहा है दंग ।

(मराठी से अनुवाद कविता
वसंत बापट, किशोर दिवाळी ७२)

पंगत

बस पंगत में जम गई बात,
लड्डू-जलेबी दोनों साथ ।
दोनों ने मिल किया फैसला,
छुपकर भाग चलेंगे साथ ।

लड्डू गेंद बनकर उचका,
जलेबी दौड़ी बनकर चक्का ।
ये भागे वो भागे दोनों,
दौड़ो-दौड़ो पकड़ो-पकड़ो,
भागम भाग में पाग टपका ।।

(मराठी से अनुवाद कविता
कमला पवार, किशोर जुलै ७३)

लोकगीत

लोकगीत

लोगों के मन के आनंद, दुख, निराशा जैसे भाव जब गीतों के माध्यम से व्यक्त किए जाते हैं तब ऐसे गीतों को लोकगीत कहते हैं । लोकगीत कई तरह के होते हैं । उनमें से खेत में वर्षा हो; इसके लिए गाया जाने वाला यह लोकगीत पढ़ें ।

धोंडी बाई धोंडी । धोंडी गई बाजार ।
बरखा आई जोर से, बरसे मूसलाधार ।
धोंडी की भीगी रोटी,
और पका अनाज,
भीगने दे रे भीगने दे, चारा पानी पकने दे ।
भर-भर के दाने पकने दे ।

(मराठी से अनुवाद कविता
मराठी संस्कृती-मराठी अस्मिता)

मेरी कृति :

- कोई लोकगीत प्राप्त करके उसे कंठस्थ करो।

स्वरालंकार

सा रे ग म प ध नि इन सात सुरों के समूह को 'सप्तक' कहते हैं । एक सप्तक में ७ शुद्ध सुर, ४ कोमल सुर तथा १ तीव्र सुर ऐसे कुल १२ सुरों का समावेश होता है ।

१) **आरोह :** साग रेम गप मध पनि धसां

अवरोही : सांध नीप धम पग मरे गसा

२) **आरोह :** सागरेसा रेमगरे गपमग मधपम पनिधप धसांनिध निरेसानी सागरेसा

अवरोही : सांगरेंसां निरेंसांनी धसांनिध पनिधप मधपम गपमग रेमगरे सागरेसा

३) **आरोह :** सारेगसारेगम रेगमरेगमप गमपगमपध मपधमपधनि पधनिपधनिसां

अवरोही : सांनिधसांनिधप निधपनिधपम धपमधपमग पमगपमगरे मगरेमगरेसा

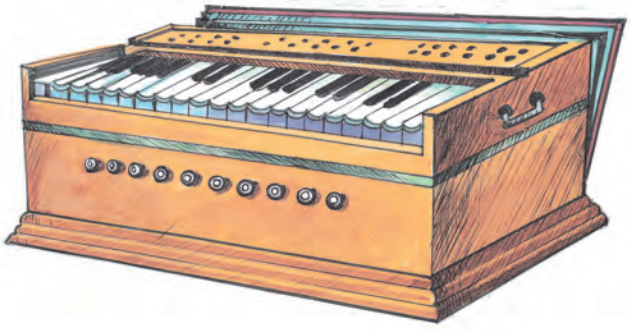

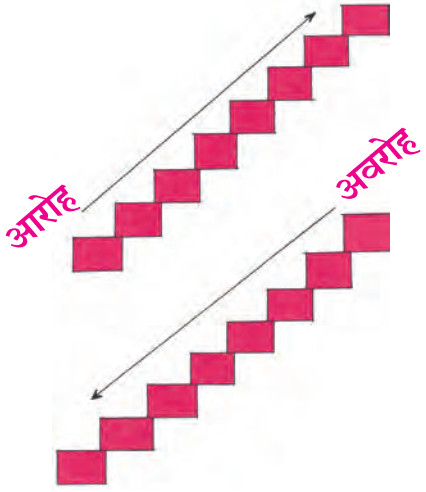

मेरी कृति : स्वरालंकार लिखो ।

◆ स्वर अलंकार का अभ्यास करवाएँ । आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन करें । आरोह-अवरोह समझाएँ ।